60

समय के अन्त पर उसके दृष्टांत

(25:1-46)

अध्याय 24 में आरम्भ हुआ ''जैतून का उपदेश'' इस अध्याय में जारी रहता है। अपने चेलों से अभी भी बात करते हुए यीशु ने समय के अन्त के विषय में तीन अतिरिक्त दृष्टांत बताए: दस कुंवारियों का दृष्टांत (25:1-13), तोड़ों का दृष्टांत (25:14-30) और भेड़ों और बकरियों का दृष्टांत (25:31-46)। इस अन्तिम दृष्टांत को आम तौर पर ''न्याय का अन्तिम दृश्य'' कहा जाता है। ये तीनों दृष्टांत मसीह के द्वितीय आगमन की पर्याप्त तैयारी के महत्व पर ज़ोर देते हैं। वे मत्ती रचित सुसमाचार के लिए विलक्षण भी हैं।

दस कुंवारियों का दृष्टांत (25:1-13)

[1]''तब स्वर्ग का राज्य उन दस कुंवारियों के समान होगा जो अपनी मशालें लेकर दूल्हे से भेंट करने को निकलीं। [2]उन में पांच मूर्ख और पांच समझदार थीं। [3]मूर्खों ने अपनी मशालें तो लीं, परन्तु अपने साथ तेल नहीं लिया। [4]परन्तु समझदारों ने अपनी मशालों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी भर लिया। [5]जब दूल्हे के आने में देर हुई, तो वे सब ऊंघने लगीं, और सो गईं। [6]आधी रात को धूम मची, कि देखो, दूल्हा आ रहा है, उस से भेंट करने के लिए चलो। [7]तब वे सब कुंवारियां उठकर अपनी मशालें ठीक करने लगीं। [8]और मूर्खों ने समझदारों से कहा, अपने तेल में से कुछ हमें भी दो, क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं। [9]परन्तु समझदारों ने उत्तर दिया कि कदाचित हमारे और तुम्हारे लिए पूरा न हो; भला तो यह है, कि तुम बेचनेवालों के पास जाकर अपने लिए मोल ले लो। [10]जब वे मोल लेने को जा रही थीं, तो दूल्हा आ पहुंचा, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ ब्याह के घर में चली गईं और द्वार बन्द किया गया। [11]इसके बाद वे दूसरी कुंवारियां भी आकर कहने लगीं, हे स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिए द्वार खोल दे। [12]उस ने उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच कहता हूं, मैं तुम्हें नहीं जानता। [13]इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को।''

आयत 1. इन तीनों दृष्टांतों में से पहले दृष्टांत में प्रभु की वापसी के लिए हर समय तैयार रहने की आवश्यकता पर ध्यान दिया गया है, क्योंकि कोई नहीं जानता कि उसका आना कब हो जाए। इस दृष्टांत का आरम्भ **स्वर्ग का राज्य ... के समान होगा** वाक्यांश के साथ होता है। यीशु आम तौर पर राज्य को ऐसी भाषा के साथ समझाता था (13:24, 31, 44, 45, 47; 18:23; 22:2)।

यहां पर यीशु ने राज्य को **दस कुंवारियों** से की जो दूल्हे के आने पर उसके साथ होने के

लिए गई थीं। यहूदी मत में ''दस'' एक महत्वपूर्ण अंक है और यह इस कहानी के लिए एक सही अंक है। ''कुंवारियों'' के लिए शब्द (*parthenos*) वही शब्द है, जिसका इस्तेमाल आश्चर्यकर्म के द्वारा गर्भधारण करने के समय मरियम के वर्णन के लिए किया गया था (1:23; लूका 1:27)। इस दृष्टांत वाली कुंवारियां यीशु के चेलों को दर्शाती हैं। इससे पहले और बाद के दृष्टांतों में प्रभु ने अपने चेलों को नरम उदाहरण देते हुए सावधान रहने की शिक्षा दी थी (24:45-51; 25:14-30)। यहां पर उसने नारियों का इस्तेमाल करते हुए इस नियम को समझाया। यीशु के कई उदाहरणों में पुरुष और स्त्री दोनों की गतिविधियां दी जाती हैं (6:26, 28; 11:17; 24:40, 41)।

ये कुंवारियां शायद आधुनिक ''ब्राइडगर्ल'' जैसी थीं, जो बारात में साथ होती थीं। परन्तु जैसा कि लियोन मौरिस ने कहा है, प्राचीन यहूदी विवाह समारोह का हमारा ज्ञान अधूरा है।[1] यह आयत कहती है कि **दूल्हे से भेंट करने को निकलीं**,[2] पर यह स्पष्ट नहीं करती कि वे उसकी प्रतीक्षा कहां पर कर रही थीं। सुझाव दिया गया है कि कुंवारियां दूल्हे के घर में उसकी राह देख रही थीं। उदाहरण के लिए उस समय की यहूदी परम्पराओं की हमारे पास जो जानकारी है, उसके आधार पर यह अनुमान लगाया गया है कि दूल्हा अपनी दुल्हन को लेने के लिए अपने ससुर के घर जाता था। अपने घर में वह कुंवारियों की एक टोली को छोड़ जाता था, जो उसके आगमन पर उससे भेंट करने के लिए लालटेनें या मशालें लेकर बाहर आती थीं। उन्हें घर में उसे लाने के लिए वहां होना आवश्यक होता था।[3]

अन्यों का विचार है कि कुंवारियां दुल्हन के घर में ही उसके साथ राह देख रही थीं। जब दूल्हा विवाह के समारोह के लिए दुल्हन को अपने घर ले जाने के लिए पहुंचता, तब दस कुंवारियों ने बारात में शामिल होना होता था।[4] इन दोनों में से कोई भी विकल्प हो सकता है पर दृष्टांत के अर्थ को समझने के लिए सही-सही स्थान का होना बड़ी बात नहीं है। मतलब यह है कि वे दूल्हे का सम्मान करते हुए विवाह के जश्न में शामिल होने के लिए राह देख रही थीं।

दूल्हे के रूपक की जड़ें पुराने नियम में पाई जाती हैं। कई आयतें परमेश्वर को पति के रूप में और इस्राएल को उसकी पत्नी के रूप में वर्णित करती हैं (यशायाह 54:4-8; 62:4, 5; यहेजकेल 16:6-14; होशे 2:19, 20)। इसी प्रकार से नये नियम में यीशु दूल्हा है और कलीसिया उसकी दुल्हन है (9:15; 22:2; यूहन्ना 3:29; 2 कुरिन्थियों 11:2; इफिसियों 5:25-32; प्रकाशितवाक्य 19:7, 8; 21:2)। इस हवाले में दूल्हे का रूपक चाहे विस्तार से नहीं दिया गया पर दूल्हा मसीह को दर्शाता हो सकता है।

विवाह के समारोह विशेष करके दूल्हे के घर में ही होते थे पर आम तौर पर रात को किए जाते थे (25:6)। यहां ऐसा हुआ था इसी कारण बारात में जलाने के लिए कुंवारियों ने **अपनी मशालें** ले लीं। अनुवादित शब्द ''मशालें'' यूनानी शब्द (*lampas*) का अर्थ ''लालटेनें'' भी हो सकता है (यूहन्ना 18:3)। एक अलग शब्द, *luchnos*, घर में जलाए जाने वाले छोटे लैंप को दर्शाता है (5:15 पर टिप्पणियां देखें)। इस अवसर पर ''मशालें'' लम्बी डंडी में लगी फटे कपड़े की टाकी के साथ कसकर बंधी हो सकती हैं; कपड़े को जैतून के तेल के साथ भिगोया जाता होगा जिससे वह काफ़ी समय तक जलता रहता होगा। एक और सम्भावना यह है कि ''मशालें'' कीप डंडे के ऊपर रखे तेल के दिए होते थे। जॉन लाइटफुट ने रब्बियों की एक प्राचीन

बात का हवाला दिया है जो रब्बी सॉलोमन की बताई जाती है:

> इस्राएलियों के देश में अपने पिता के घर से दूल्हे के घर तक उसके बिस्तर पर जाने से पहले दुल्हन को ले जाने की प्रथा है: और उसके आगे दस लकड़ी की तख्तियां ले जाना, जिनमें सबके ऊपर थाली जैसा बर्तन होता है जिसमें तेल और डंडे के साथ कपड़े की एक टकी होती है: इन्हें जलाकर वे मशालें लेकर उसके आगे-आगे चलती हैं।[6]

आयत 2. यीशु ने कहा कि दस कुंवारियों में **पांच मूर्ख और पांच समझदार थीं**। मत्ती में दो तरह के मकान बनाने वालों के वर्णन के लिए (7:24, 26)। ''मूर्ख'' (*mōros*) और ''बुद्धिमान'' और ''समझदार'' (*thronimos*) शब्दों का भी इस्तेमाल हुआ है। यहां पर दस कुंवारियों का मिलाजुला समूह था। उनमें से आधी तो विश्वासयोग्य चेलियां थीं, जबकि आधी नहीं। यह कहानी का केवल भाग है; यह बिल्कुल नहीं दर्शाता कि विश्वासियों का कितना प्रतिशत मसीह के दोबारा आने पर विश्वासयोग्य ठहराया जाएगा या अविश्वासयोग्य।

आयत 3. इन पांच कुंवारियों को **मूर्ख** क्यों कहा गया? उन्होंने दूल्हे के आगमन में सम्भावित देरी के लिए पर्याप्त तैयारी नहीं की। उनके पास अपनी **मशालें** थीं, पर उन्होंने अपने साथ अतिरिक्त तेल नहीं लिया था। पिछले एक दृष्टांत में दुष्ट सेवक (24:48-50) स्वामी के जल्द लौटने की तैयारी नहीं कर पाया था; परन्तु ये मूर्ख कुंवारियां देरी से आने की समस्या पर ध्यान न दे पाईं।[7]

आयत 4. अन्य पांच कुंवारियों को **समझदार** (''बुद्धिमान''; NIV) कहा गया, क्योंकि वे न केवल **अपनी मशालों** को जलाए रखने के लिए पर्याप्त तेल लेकर आईं बल्कि उन्होंने अतिरिक्त **तेल की कुप्पियां** भी ले लीं। यह सुविधाजनक नहीं था पर इन युवतियों ने वही किया जो आवश्यक था। अनुभव से उन्हें मालूम था कि दूल्हे के आने में देर हो सकती है और वे अन्त में उसके पहुंचने पर तैयार रहना चाहती थीं। अपनी मशाल को जलाए रखने के लिए पर्याप्त तेल लेना यीशु की आज्ञाओं के अनुसार किए जाने वाले भले कार्यों को दर्शाता है (देखें 5:14-16)।[8]

आयत 5. ये दस कुंवारियां प्रतीक्षा करती रहीं, दूल्हे के आने में देर हो गई। यह विवरण बहुत हैरान करने वाला नहीं होना चाहिए। क्योंकि उस समाज के दूल्हे अपने आने के समय को गुप्त रखना पसन्द करते थे। यहां पर देरी मसीह की वापसी के पहले से समय लम्बी अवधि को दर्शाती है (देखें 25:19)। आरम्भिक मसीही यीशु के जल्द वापस आने की उम्मीद करते हैं। हो सकता है कि शायद 50 के दूसरे भाग या 60 के दशक के आरम्भ में सुसमाचार के उसके विवरण के लिखने के समय मत्ती के पाठक इसी बात पर उलझ रहे होंगे। पतरस जिसने 60 के दशक के बीच में लिखा, उन ठट्ठा करने वालों को उत्तर दिया, जो मज़ाक में कहते थे, ''उसके आने की प्रतिज्ञा कहां गई?'' (2 पतरस 3:4)।

धीरे-धीरे समय बीत जाने पर वे **सब युवतियां ऊंघने लगीं, और सो गईं**। काफी देर हो चुकी थी इस कारण यह तथ्य कि दसों कुंवारियां थककर सो गईं, समझ में आता है। यीशु ने सो जाने के लिए उनकी चिंता नहीं की। मूर्ख कुंवारियां भी इस बात में वैसे ही दोषी नहीं थीं जैसे समझदार कुंवारियां। परन्तु अन्य वचनों में सोने को जागने के उलट रखा गया है और इसे नकारात्मक रूप में देखा जाता है (26:38-46; मरकुस 13:35, 36; इफिसियों 5:14;

1 थिस्सलुनीकियों 5:6)।

आयत 6. धूम शायद (22:3 पर टिप्पणियां देखें) वो शायद किसी शोर मचाने वाले द्वारा **आधी रात** को अन्त में खबर आई कि **दूल्हा** आ रहा है और दसों कुंवारियों को **उससे भेंट करने के लिए** बुला लिया गया।

आयत 7. स्वागत के समाचार के उत्तर में **वे सब कुंवारियां** उठकर अपनी मशालें ठीक करने लगीं। क्रिया शब्द "ठीक करने" (*kosmeō*) का अर्थ आम तौर पर "दुरुस्त करना" है। यदि ये "मशालें" लकड़ी के चारों ओर बंधे हुए फटे कपड़े वाली थीं तो उनके गुल उतारकर उन पर और तेल लगाया गया होगा। यदि वे डंडे के ऊपर लगे तेल के लिए थी तो उसके गुल को उतारकर और तेल डाला गया होगा।

आयतें 8, 9. मूर्खों के **अपनी मशालों** को ठीक करते हुए उनकी बत्तियां **बुझी जाती हैं**। पुराने नियम में बत्ती बुझने का रूपक दुष्ट के साथ जोड़ा गया (अय्यूब 18:5; नीतिवचन 13:9)। **मूर्खों** को समझ आ गया कि उन्होंने दूल्हे के देरी से आने की बात सोची ही नहीं। अपनी दुविधा को दूर करने के लिए उन्होंने अपनी सहेलियों से **कुछ तेल** उधार मांगा।

समझदारों ने यह कहते हुए कि तेल उनके लिए **पूरा न होगा,** उनकी विनती नहीं मानी। वे हर मशाल बुझ जाने का जोखिम नहीं लेना चाहती थीं। यदि ऐसा हो जाता तो बारात का मजा किरकिरा हो जाना था।[8]

उन्होंने मूर्ख कुंवारियों से **बेचने वालों** के पास **जाकर** अपने लिए तेल **मोल** लेने की सलाह दी। दुकानें आम तौर पर सारी रात खुली नहीं रहती थीं पर शायद पर्व के अवसर पर खुली रहती हों। डोनल्ड ए. हेग्नर का मानना था कि "शादी के पूरे जश्न में रंगे छोटे से गांवों में देर रात को तेल खरीदना कठिन नहीं होगा।"[9] मूर्ख कुंवारियों के अपना ही तेल पाने का विवरण इस तथ्य को दिखाता है कि अच्छे काम स्थानांतरित नहीं होते। मसीह के आने पर हर व्यक्ति को जो कुछ उसने किया है उसी का जवाब देना होगा (2 कुरिन्थियों 5:10)।

आयत 10. जलती हुईं मशालें लेकर दूल्हे से मिलने के बजाय पांच मूर्ख कुंवारियां अपना तेल **मोल** लेने के लिए चली गईं। जब वे चली गईं तो **दूल्हा आ पहुंचा**। पांच समझदार कुंवारियों ने अपनी ठीक की हुई और जलती हुईं मशालों के साथ दूल्हे से भेंट की। मिलकर उन्होंने **ब्याह के घर में** उनकी अगुआई की। द्वार का बंद होना इस बात का संकेत है कि किसी के हाथ से अवसर निकल गया (उत्पत्ति 7:16; यशायाह 22:22; लूका 13:25; प्रकाशितवाक्य 3:7)।

आयत 11. मूर्ख **कुंवारियां** जब वापस आईं तो उन्होंने दरवाजा बंद पाया और दूल्हे से उन्हें अंदर आने देने की विनती करने लगीं। वे कहने लगीं, "**हे स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिए द्वार खोल दे।**" जिस प्रकार से "मूर्ख" और "समझदार" समझ दो मकान बनाने वालों का ध्यान दिलाते हैं (7:24, 26) वैसे ही "हे स्वामी, हे स्वामी" उसी अध्याय में यीशु की चेतावनी को ध्यान दिलाता है। उसने कहा, "जो मुझ से हे प्रभु! हे प्रभु, कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है" (7:21)। आनन्द भरे जश्न में अन्दर आने देने की मूर्ख कुंवारियों की विनतियां बेकार थीं।

आयत 12. दूल्हे ने यह कहते हुए, "**मैं तुम्हें नहीं जानता**" (7:23 पर टिप्पणियां देखें)। उन्हें अन्दर बुलाने से मना कर दिया। इस घोषणा से "मुझे तुम से कोई काम नहीं है" के रूप में

लिखा जा सकता है।[10] पुराने नियम में परमेश्वर अपने लोगों को, जिन्हें उसने चुना है ''जानता है'' (यिर्मयाह 1:5; होशे 13:5; आमोस 3:2; KJV)। नये नियम में यह विषय उन लोगों के लिए दोहराया गया है, जो मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ उद्धार पाए हुए सम्बन्ध में हैं। जिन्हें वह ''जानता'' है कहा गया है (देखें गलातियों 4:8, 9; 2 तीमुथियुस 2:19)।[11]

यह अहसास करते हुए कि उनकी तैयारी किसी काम न आई, दरवाजे से वापस जाते हुए उन मूर्ख कुंवारियों के कष्ट की वेदना की कल्पना की जा सकती है। उन्होंने शायद अवसर के अनुसार लिबास पहनने के लिए कई घण्टे लगा दिए थे और बहुत पहले पहुंच चुकी थीं। उन्होंने समारोह के लिए तैयारियां करते हुए अभ्यास भी किया होगा। वे मशालें भी लेकर आई थीं पर दूल्हे के आने तक उन्हें जलते नहीं रख पाईं।

आयत 13. यीशु ने यह कहते हुए इस दृष्टांत को समाप्त किया: **''इसलिए जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को''** (देखें 24:36, 42, 44, 50)। हमें उसकी वापसी के सम्बन्ध में टालमटोल नहीं करनी चाहिए। समझदार होना और तैयार रहना ही सही है, क्योंकि वह किसी भी समय आ सकता है। उसके आ जाने पर अपने आपको उन पांच मूर्ख कुंवारियों की तरह बिना तैयारी के कौन देखना चाहेगा? एक बार फिर प्रभु की वापसी के लिए तैयार रहने की चेतावनी लोगों को हमेशा दी जाती है।

तोड़ों का दृष्टांत (25:14-30)

[14]क्योंकि यह उस मनुष्य की सी दशा है जिसने परदेश को जाते समय अपने दासों को बुलाकर, अपनी सम्पत्ति उन को सौंप दी। [15]उसने एक को पांच तोड़े, दूसरे को दो, और तीसरे को एक अर्थात हर एक को उस की सामर्थ के अनुसार दिया, और तब परदेश चला गया। [16]तब जिस को पांच तोड़े मिले थे, उस ने तुरन्त जाकर उन से लेन-देन किया, और पांच तोड़े और कमाए। [17]इसी रीति से जिस को दो मिले थे, उस ने भी दो और कमाए। [18]परन्तु जिस को एक मिला था, उस ने जाकर मिट्टी खोदी और अपने स्वामी के रुपये छिपा दिए।

[19]बहुत दिनों के बाद उन दासों का स्वामी आकर उन से लेखा लेने लगा। [20]जिस को पांच तोड़े मिले थे, उस ने पांच तोड़े और लाकर कहा; हे स्वामी, तू ने मुझे पांच तोड़े सौंपे थे, देख, मैंने पांच तोड़े और कमाए हैं।

[21]उसके स्वामी ने उससे कहा, धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा, अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो। [22]और जिस को दो तोड़े मिले थे, उस ने भी आकर कहा, हे स्वामी, तू ने मुझे दो तोड़े सौंपे थे, देख मैं ने दो तोड़े और कमाए हैं। [23]उसके स्वामी ने उससे कहा, धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो। [24]तब जिस को एक तोड़ा मिला था, उस ने आकर कहा; हे स्वामी, मैं तुझे जानता था, कि तू कठोर मनुष्य है: तू जहां कहीं नहीं बोता वहां काटता है, और जहां नहीं छींटता वहां से बटोरता है। [25]सो मैं डर गया

और जाकर तेरा तोड़ा मिट्टी में छिपा दिया; देख, जो तेरा है, वह यह है।

[26]उसके स्वामी ने उसे उत्तर दिया, कि हे दुष्ट और आलसी दास; जब यह तू जानता था, कि जहां मैं ने नहीं बोया वहां से काटता हूं और जहां मैंने नहीं छींटा, वहां से बटोरता हूं। [27]तो तुझे चाहिए था, कि मेरा रुपया सर्राफों को दे देता, तब मैं आकर अपना धन ब्याज समेत ले लेता।

[28]इसलिए वह तोड़ा उससे ले लो, और जिस के पास दस तोड़े हैं, उस को दे दो। [29]क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा: परन्तु जिस के पास नहीं है, उस से वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा। [30]और इस निकम्मे दास को बाहर के अन्धेरे में डाल दो, जहां रोना और दांत पीसना होगा।

तोड़ों का दृष्टांत जोर देता है कि यीशु के अनुयायी जिम्मेदार भण्डारी हैं। प्रभु के राज्य को बढ़ाने के लिए हर किसी को कोई न कोई दान या तोड़े दिए गए हैं। मसीह की वापसी पर हर किसी को हिसाब देना होगा कि उसने इन संसाधनों का इस्तेमाल कैसे किया है। जिन्होंने अपने आपको काम पर लगाकर अपने तोड़े बढ़ा लिए हैं उन्हें यह ठहराया जाएगा। इसके विपरीत जिन्होंने अपने तोड़े छुपा लिए हैं, उन्हें दोषी ठहराया जाएगा।

ऐसा ही एक दृष्टांत लूका 19:11–27 में मिलता है। दस मोहरों के दृष्टांत में आदमी ने अपने दासों को और भी कुछ संसाधन दिए और दूर देश में चला गया। वापस आने पर उसने उनसे हिसाब लेने के बाद और तीन दासों की बातचीत को दिखाया गया है। पहले दो ने तो विश्वास योग्य ढंग से काम किया था, जबकि तीसरे ने काम नहीं किया। परिणाम यह हुआ कि बेईमान दास को दी गई मोहरें उससे लेकर लाभदायक दास को दे दी गईं।

दोनों दृष्टांतों के बीच कई अन्तर पाए जाते हैं। मोहरों के दृष्टांत में *तीन* दासों के बजाय आरम्भ में *दस* दासों का उल्लेख है। हर किसी को *अलग-अलग* रोकड़ देने के बजाय *एक ही* राशि दी गई। कहानी में इस्तेमाल हुआ भार का पैमाना *तोड़ा नहीं,* बल्कि *मोहर* था। अपने धन को ज़मीन में *गाड़ने* के बजाय निकम्मे दास ने इसे *अंगोछे* में बांध लिया।

आयत 14. दस कुंवारियों वाले पिछले दृष्टांत का परिचय ''स्वर्ग का राज्य उन दस कुंवारियों के समान होगा'' वाक्यांश के साथ कराया गया था (25:1)। वही अभिव्यक्ति इस दूसरे दृष्टांत में स्पष्ट रूप में संक्षिप्त कर दी गई है, क्योंकि इसका आरम्भ **क्योंकि यह उस मनुष्य की सी दशा है** से होता है। कुछ अनुवादों में ''यह'' के स्थान पर ''स्वर्ग का राज्य'' वाक्यांश लगाकर तुलना की इस बात को स्पष्ट करते हैं (KJV; NKJV; TEV; NCV; NLT)। ''क्योंकि यह उसकी दशा है'' वाक्यांश का अर्थ आयत 13 में बताए गए फर्ज के प्रति चौकस होने के लिए हो सकता है।[12]

इस दृष्टांत वाला धनवान गृहस्वामी **प्रदेश को** जा रहा था। यूनानी भाषा में क्रिया शब्द *apodēmeō* में अपने लोगों को छोड़कर किसी दूसरे देश में जाने का विचार पाया जाता है (21:33; मरकुस 12:1; लूका 15:13; 20:9)। दी गई परिस्थितयों से यह स्पष्ट है कि वह लम्बे समय के लिए जाना चाहता था (25:19)। जाने से पहले उसने **अपनी कुछ सम्पत्ति** की जिम्मेदारी **अपने दासों को** दी जिनसे समझदारीपूर्ण और वफ़ादारी से भण्डारीपन की उम्मीद

थी। प्राचीन संसार में कुछ दासों को बहुत बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियां दे दी जाती थीं (18:23-27; 21:34; 24:45-47)।

आयत 15. गृहस्वामी ने अपना धन हर **एक को उसकी सामर्थ के अनुसार** बांट दिया। **''उस ने एक को पांच तोड़े, दूसरे को दो, और तीसरे को एक''** दिया। ''तोड़ा'' शब्द पचहत्तर पौंड के लगभग भार की सबसे बड़ी इकाई के लिए ''तोड़ा'' शब्द का इस्तेमाल हुआ है (18:24 पर टिप्पणियां देखें)। इसका इस्तेमाल सोना, चांदी, तांबे को तोलने के लिए किया जाता था, जिनमें प्रत्येक की अपनी अलग कीमत थी। इस कहानी में सम्भवतया चांदी है। यूनानी शब्द *argurion,* जिसका अनुवाद ''चांदी'' या ''धन'' हो सकता है, आयतें 18 और 27 में मिलता है।

तोड़ा लगभग 6,000 दीनार की कीमत जितना था,[13] और दीनार एक मज़दूर की प्रतिदिन की मज़दूरी होती थी (20:2)। इसलिए तोड़ा लगभग 20 साल की आमदनी के बराबर होना था और दो तोड़े 40 साल की आमदनी होने थे। पांच तोड़े ''एक साल की मज़दूरी के बराबर होने थे'' (JNT) ''तोड़े'' का अनुवाद आधुनिक अर्थ में करना तो कठिन है पर स्वामी निश्चय ही धनवान व्यक्ति था, जिसके पास देने के लिए इतना पैसा था, प्रत्येक दास को दिया जाने वाला पैसा काफ़ी था यानी किसी को भी कम नहीं मिला था। आर. ए. हेयर ने कहा है, ''धन की बहुतायत हमें हमारी सम्भाल में परमेश्वर द्वारा दिए गए दानों के बहुमूल्य होने को याद दिलाने के लिए की गई थी।''[14]

यहां दासों को दी गई घर के मालिक की कोई नसीहत नहीं बताई गई, चाहे उसने *परदेश* **जाने से पहले उन्हें कुछ न कुछ निर्देश अवश्य दिए होंगे।** दस मुहरों के दृष्टांत में स्वामी ने अपने दासों से कहा था, ''मेरे लौट आने तक लेन देन करना'' (लूका 19:13)।

आयत 16. इस आयत में पहला शब्द **तब** यह दिखाता है कि जिसके पास **पांच तोड़े** थे वह अपने आप में प्रेरणादायक था।[15] उसने अपने तोड़े दोगुने कर लिए। **लेन देन** के लिए शब्द (*ergazomai* से) लम्बी अवधि के लिए कारोबार करने का सुझाव देता है। ऐसा नहीं है कि इस सेवक ने जाकर पैसे निवेश किए और भूल गया हो। वह अपने स्वामी के लौटने तक उस निवेश को बढ़ाता रहा। उसमें उसके स्वामी का भरोसा गलत नहीं था।

आयत 17. इसी रीति से संकेत देता है कि अगले दास ने भी **तुरन्त** अपने **दो तोड़े** काम पर लगा दिए होंगे। इस कारण **उसने दो और कमाए।** पहले दो दासों को चाहे अलग-अलग राशियां दी गई थीं परन्तु उन्होंने जो उन्हें दिया गया था उसका दोगुणा कर दिया।

आयत 18. तीसरे दास ने अपने **एक तोड़े** को काम पर लगाने के बजाय उसे **मिट्टी** में छुपा दिया। उसे भी अन्य दो सेवकों की तरह ही जो कुछ उसे दिया गया था उसका इस्तेमाल करने और अपने तोड़े को दोगुणा करने का अवसर दिया गया था। इस व्यक्ति ने जुआ खेलकर, लापरवाही से खोकर या ऐशोआराम में **अपने स्वामी के रुपये** बर्बाद नहीं किए थे। केवल उसने उनका कोई उपयोग नहीं किया।

इस दास ने धन को सम्भालकर रखने के लिए इसे **छिपा** दिया। टालमुड कहता है, ''धन की रक्षा केवल भूमि में रखकर की जा सकती है।''[16] प्राचीन लोगों के पास आज की तरह तहखाने और तिजोरियां नहीं होती थीं। इस कारण आम तौर पर वे चोरों से अपनी सम्पत्ति को बचाने के

लिए इसे भूमि में दबा देते थे (6:20; 13:44; 24:43 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 19. यीशु ने इस दृष्टांत के साथ समझाया कि उसका आना तुरन्त नहीं होना था परन्तु **बहुत दिनों के बाद** होना था (देखें 25:5)। **उन दासों का स्वामी** जब वापस लौटा तो वह **उनसे लेखा-जोखा लेने लगा** (देखें 18:23)।

आयतें **20, 21.** पहले दास ने बिल्कुल वैसा कि जैसा उसके स्वामी को उम्मीद थी कि वह करेगा। उसने अपने **पांच तोड़े** लेकर काम पर लगा दिए और वे तुरन्त बढ़ने लगे जिस कारण जब उसका स्वामी वापस लौटे तो उसे **पांच** के बजाय दस तोड़े दिए। **स्वामी** उसके काम से इतना प्रसन्न हुआ कि उसने यह कहते हुए उसे शाबाशी दी, "**धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास।**" "धन्य" और "विश्वासयोग्य" का सम्बन्ध उसकी प्राप्ति से बढ़कर उसके चरित्र से है। यह दास इसलिए सफल हो पाया क्योंकि वह उसे दिए गए कर्त्तव्य के प्रति अच्छा और विश्वासयोग्य था।

दास की विश्वासयोग्य सेवा से उसे बड़ी जिम्मेदारी मिलनी थी (देखें 24:45-47; लूका 16:10)। स्वामी ने बताया, "**तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा, अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो।**" उसकी अपार सम्पत्ति का इस तथ्य से पता चलता है कि उसने पांच तोड़े देने की बात "थोड़े" के रूप में देखी। स्वामी के आनन्द में सम्भागी होना। यीशु और उसके विश्वासयोग्य चेलों के बीच की धन्य सहभागिता की ओर संकेत करता है (रोमियों 8:17; 2 तीमुथियुस 2:11-13)।

आयतें 22, 23. अपने स्वामी के सामने कतार में आगे **दो तोड़** पाने वाला **दास** था। उसने बताया कि उसने भी उसके तोड़े दोगुणे कर दिए थे और उन्हें चार बना दिया था। स्वामी ने इस दास की भी वैसे ही तारीफ की, जैसे पांच तोड़े वाले की की थी। उसने उसके लिए भी शाबाश के उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल किया और उसे भी वही इनाम दिया। इस दास को भी उसने बड़ी जिम्मेदारी दी।

आयतें 24, 25. अन्त में **एक तोड़े** वाला दास **अपने स्वामी के सामने आया**। उसने बताया कि उसने स्वामी का **तोड़ा मिट्टी में छुपा दिया**। क्योंकि उसे मालूम था कि उसका स्वामी **कठोर मनुष्य** था (देखें लूका 19:20, 21)। इस दास को अपने स्वामी की सच्चाई और ईमानदारी पर विश्वास नहीं था, चाहे उसके स्वामी ने उसे एक तोड़े जितनी जिम्मेदारी देकर उसमें विश्वास जताया था। उसे कठोर और बहुत अपेक्षा रखने वाला बताते हुए वह एक समानार्थी प्रयायवाची का इस्तेमाल करते हुए स्वामी का वर्णन करता रहा:

तू जहां कहीं नहीं बोता वहां काटता है, और जहां नहीं छींटता वहां से बटोरता है।

वह कह रहा था कि कठिन काम बोने और काटने का खेतों से लाभ लिया था। संक्षेप में वह दास अपने स्वामी पर क्रूर पूंजीवादी होने का आरोप लगा रहा था।

उस दास ने यह मान लिया कि वह **डर गया** था। नरक में फैंके जाने वाले घृणा के योग्य लोगों की सूची में सबसे ऊपर डरपोकों को रखा गया है (प्रकाशितवाक्य 21:8)। कुछ लोग गलती करने से इतना डरते हैं कि वे कभी सही काम करते ही नहीं है। बहुत से लोग सकारात्मक ढंग से काम न कर पाने के कारण नष्ट हो जाएंगे (25:45, 46)।

वृत्तांत में चाहे स्पष्ट नहीं कहा गया, पर दास को अपने स्वामी को लौटाने के लिए जो ज़मीन में गाड़ा था उसे निकालना था। एक तोड़ा देते हुए उसने कहा, "**देख, जो तेरा है, वह यह है।**" इस व्यापारिक भाषा में क्षतिपूर्ति का संकेत था और किसी भी और जिम्मेदारी से इनकार था।[17]

आयत 26. शायद दास को लगा हो कि उसे स्वामी का तोड़ा जैसे उसे दिया गया था उसे वैसा का वैसे सही-सलामत लौटाने का पुरस्कार दिया जाना चाहिए। परन्तु प्रशंसा किए जाने के उलट उसे दोषी बताया गया। **स्वामी** ने उसे **दुष्ट और आलसी दास** कहते हुए उत्तर दिया था। उसने दूसरों से कम योग्यता होने के कारण उसकी आलोचना नहीं की; उसकी आलोचना तो वह न करने के लिए की गई जो वह कर सकता था। "आलसी" शब्द (*oknēros*) में भय के कारण बेकार होने के लिए हो सकता है। इसमें आयत 25 वाला अध्याय "डर" जाने के दास के अंगीकार के साथ मेल खाता है।

स्वामी ने दास के उसे कठोर व्यक्ति बताने का इनकार नहीं किया। वास्तव में उसने कहा, "**यह तू जानता था, कि जहां मैं ने नहीं बोया वहां से काटता हूं और जहां मैंने नहीं छींटा वहां से बटोरता हूं।**" रॉबर्ट एच. गुंड्री ने "जहां मैंने नहीं छींटा वहां से बटोरने" की निम्न व्याख्या दी है:

> स्वामी के किसी का सामान जबर्दस्ती लेने वाले के रूप में दिखाने की बात से हमें यीशु के "रात को चोर" की तरह आने से तुलना किए जाने की तरह परेशान नहीं होना चाहिए। यहां तुलना चोरी करने के साथ नहीं, बल्कि अचानक आने के साथ है। वैसे ही यहां पर भी इस चित्रण का सम्बन्ध भले काम करने की यीशु की जबर्दस्त मांग के साथ है न कि दूसरों की चीज़ों पर कब्जा करने की नीति से।[18]

आयत 27. दास को समझ थी कि उसका स्वामी बहुत अधिक अपेक्षा रखने वाला व्यक्ति है। इस कारण उसे कम से कम **रुपया सर्राफों को** दे देना चाहिए था ताकि इससे **ब्याज** मिल जाता। यह मामूली सा काम करने में बहुत कम जोखिम भी नहीं होना था।

"सर्राफों को" वाक्यांश का अर्थ अधिक "साहूकारों को" है (NIV; NRSV)। "सर्राफ" के लिए यूनानी शब्द (*trapezitēs*) का सम्बन्ध "मेज़" के लिए शब्द (*trapeza*) से है क्योंकि पैसे का लेन देन करने वाले छोटी-छोटी चौंकियों पर बैठते थे। व्यवस्था इस्राएलियों को एक दूसरे से ब्याज लेने से मना करती थी पर अन्यजातियों से वे ब्याज ले सकते थे (निर्गमन 22:25; लैव्यव्यवस्था 25:36, 37; व्यवस्थाविवरण 23:19, 20; देखें भजन संहिता 15:5)। स्पष्टतया पहली सदी के फलस्तीन में जो उस समय व्यापारिक वर्ग रहा था इन पाबंदियों का पालन सख्ती से नहीं किया जा रहा था।[19]

आयत 28. दास ने उसका भरोसा तोड़ा था। इस कारण उसका एक **तोड़ा उससे** लेकर उसे दे दिया गया जिसके पास **दस तोड़े** थे। आप कह सकते हैं कि उस आदमी का सब कुछ छिन गया था।[20]

आयत 29. NASB में आयत 28 के अन्तिम भाग को उद्धरण-चिह्नों में रखकर स्वामी के उत्तर को संक्षिप्त किया गया है। जो आयतें 29 और 30 को यीशु की व्याख्या बना देगा। परन्तु बाइबल के अधिकतर संस्करणों में स्वामी के शब्दों को आयत 30 तक बढ़ाया गया है। दोनों ही

सम्भावनाओं की अपनी अपनी खूबी है।

''क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा: परन्तु जिस के पास नहीं है, उस से वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा।'' यीशु ने यह लोकोक्ति के शब्द कई बार कहे (13:12; मरकुस 4:25; लूका 8:18; 19:26)। उसने जोर दिया कि व्यक्ति की वफ़ादारी से अतिरिक्त आशिषें मिलती है, मत्ती ''आरम्भिक आशिषों के बावजूद बेवफ़ाई से हानि होती है।''[21] कर्मवाक्य क्रियाओं ''दिया जाएगा'' और ''लिया जाएगा'' में परमेश्वर के कामों का संकेत है।[22]

आयत 30. ''और इस निकम्मे दास को बाहर के अन्धेरे में डाल दो, जहां रोना और दांत पीसना होगा।'' स्पष्टतया यहां पर दृष्टांत से आत्मिक वास्तविकता में ले जाया गया है। ''निकम्मे दास'' ने अपने स्वामी की रुचियों को आगे नहीं बढ़ाया, जिस कारण उसे कठोर दण्ड मिलना था। इसी प्रकार से जो चेले मसीह और उसके राज्य का प्रचार नहीं करते, उन्हें अनन्त दण्ड मिलेगा। ''बाहर के अंधेरे'' और ''रोना और दांत पीसना'' वाक्यांश नरक को दर्शाने के लिए मत्ती की पूरी पुस्तक में मिलता है (8:12; 13:42, 50; 22:13; 24:51)।

यह भी याद रखा जाना चाहिए कि दृष्टांत में एक तोड़े वाले आदमी को किसी खतरनाक अपराध के लिए दण्ड नहीं दिया गया था। इसके बजाय उसका न्याय इसलिए हुआ क्योंकि वह उसे दिए गए दान को अपने ऊपर लागू करने और इस्तेमाल करने में नाकाम रहा।[23]

चरवाहे के भेड़ों और बकरियों को अलग करने का दृष्टांत (25:31-46)

[31]तब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और सब स्वर्ग दूत उसके साथ आएंगे तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा। [32]और सब जातियां उसके साम्हने इकट्ठी की जाएंगी; और जैसा चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसा ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा। [33]और वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ी करेगा। [34]तब राजा अपनी दाहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया हुआ है। [35]क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं परदेशी था, तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया। [36]मैं नंगा था, तुम ने मुझे कपड़े पहिनाए; मैं बीमार था, तुम ने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था, तुम मुझ से मिलने आए। [37]तब धर्मी उसको उत्तर देंगे कि हे प्रभु, हम ने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया? या पियासा देखा, और पिलाया? [38]हम ने कब तुझे परेदशी देखा और अपने घर में ठहराया या नंगा देखा, और कपड़े पहिनाए? [39]हम ने कब तुझे बीमार या बन्दीगृह में देखा और तुझ से मिलने आए? [40]तब राजा उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया।

[41]तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, हे स्रापित लोगो, मेरे साम्हने से उस अनन्त

आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है। [42]क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को नहीं दिया, मैं प्यासा था, और तुम ने मुझे पानी नहीं पिलाया। [43]मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में नहीं ठहराया; मैं नंगा था, और तुम ने मुझे कपड़े नहीं पहिनाए; बीमार और बन्दीगृह में था, और तुम ने मेरी सुधि न ली। [44]तब वे उत्तर देंगे, कि हे प्रभु, हम ने तुझे कब भूखा, या पियासा, या परदेशी, या नंगा, या बीमार, या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा टहल न की? [45]तब वह उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने जो इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया। [46]और यह अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।

यह उन कई दृष्टांतों में से अन्तिम है, जो यीशु अध्याय 21 में बताने लगा था।[24] उसके दृष्टांत अधिकतर फलस्तीन में रहने वाले लोगों के आम अनुभवों की घटनाओं से सम्बन्धित होते थे। परन्तु यह दृष्टांत अलग है क्योंकि यह भविष्य की एक घटना को दिखाता है। यह कहानी चाहे एक चरवाहे द्वारा भेड़ों और बकरियों को अलग किए जाने की है पर इसमें अन्तिम न्याय की सच्चाइयां बताई गई हैं।[25]

आयत 31. यीशु ने दृष्टांत का आरम्भ यह कहते हुए किया कि **मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा**। 24:30 में उसने ही अपने द्वितीय आगमन के बारे में कुछ विवरण दिया था। वह "बड़ी सामर्थ और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर" आएगा। यह महिमा परमेश्वर पिता से मिलती है (16:27)। यह वही महिमा है जो संसार के बनाए जाने से पहले पिता के साथ यीशु की थी (यूहन्ना 17:5)।

प्रभु की वापसी के समय **सब स्वर्गदूत** उसके साथ होंगे। मत्ती की पुस्तक में और कहीं पर स्वर्गदूतों को कटाई करने वालों के रूप में दिखाया गया है, जो अन्तिम न्याय के समय दुष्टों को धर्मियों से अलग करते हैं (13:39, 41, 49)। यीशु की वापसी के समय बड़ी तुरही फूंकी जाएगी और स्वर्गदूत "चारों दिशाओं से उसके चुने हुओं को इकट्ठा करेंगे" (24:30, 31)।

उस समय मसीह **अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा**। मनुष्य के पुत्र के सिंहासन पर विराजमान होने का विषय दानिय्येल 7:13, 14 में देखा जा सकता है।[26] यहां पर सिंहासन राजा और न्यायी के रूप में उसके अधिकार पर ज़ोर देता है। कुछ आयतों में परमेश्वर पिता को न्याय करने वाले के रूप में दिखाया गया है, जैसे अन्य वचनों (जैसे इसमें) में यीशु को बताया गया है। प्रेरितों 17:30, 31 यह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर यीशु मसीह *के द्वारा* संसार का न्याय करेगा (देखें यूहन्ना 5:22, 27)। दोबारा आने पर यीशु "हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा" (16:27)।

प्रिमिलेनियलिज्म अर्थात हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा के विपरीत कोई आयत न यह सिखाती है और न कोई संकेत देती है कि यीशु रैप्चर के लिए वापस आएगा और उद्धार पाए हुओं को अनन्तकाल के लिए स्वर्ग में ले जाने से पहले बाद में एक हज़ार वर्ष तक पृथ्वी पर राज करने के लिए वापस आएगा।[27] मसीह का दूसरी बार आना सारे संसार का न्याय करने के लिए होगा। वह वापस आने के समय न्याय के सिंहासन पर बैठेगा (यूहन्ना 5:24-29; प्रेरितों 10:42;

17:30, 31; 2 कुरिन्थियों 5:10; 2 थिस्सलुनीकियों 1:6-10; 2 तीमुथियुस 4:1)।

आयत 32. यीशु ने कहा कि जब वह दोबारा आएगा तब **सब जातियां उसके सामने इकट्ठी की जाएंगी**। आम तौर पर इस दृश्य को अन्त समय के पहले से ठहराए अनुमानों में जोड़ने के लिए "जातियों" (*ta ethnē*) को "अन्यजातियां" तक सीमित कर दिया जाता है।[28] परन्तु यहां पर यीशु सब लोगों की बात कर रहा था चाहे वह यहूदी हों या अन्यजाति, मसीही हों या गैर मसीही।[29] न्याय केवल एक ही होगा और जो भी कोई इस संसार में रहा है वह वहां पर होगा (13:36-43; यूहन्ना 5:27-29; 1 कुरिन्थियों 15:52; 2 कुरिन्थियों 5:10; प्रकाशितवाक्य 20:11, 12)।

फिर यीशु ने कहा, "**जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसे ही वह उन्हें एक-दूसरे से अलग करेगा।**" "जातियां" के लिए यूनानी भाषा का शब्द (*ethnē*) चाहे अलिंगी शब्द है, परन्तु अनुवादित सर्वनाम "उन्हें" (*autous*) पुरुषवाचक है। यह बात संकेत देती है कि "सब जातियों" के लोगों का न्याय व्यक्तिगत रूप से होगा न कि सामूहिक रूप से।

यूहन्ना रचित सुसमाचार में यीशु ने अपने आपको "अच्छा चरवाहा" के रूप में दिखाया जो "भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है" (यूहन्ना 10:11)। वापसी के समय चरवाहे के रूप में मसीह का काम अलग करना और न्याय करना होगा (देखें यहेजकेल 34:17, 20, 22)। बाइबल में परमेश्वर के लोगों के लिए आम तौर पर भेड़ के रूपक का इस्तेमाल किया गया है, चाहे यह पुरानी वाचा के अधीन इस्राएलियों के लिए हो या नई वाचा के अधीन यीशु के चेलों के लिए (9:36 पर टिप्पणियां देखें; 10:5, 6; 15:24)। भेड़ें उन लोगों को कहा गया है जो विनम्रता से अच्छे चरवाहे के पीछे चलती हैं। जबकि बकरियां उन लोगों को जो कठोर, विरोधी और विनाशकारी हैं (देखें यहेजकेल 34:17; दानिय्येल 8:5, 7, 21)।[30]

यीशु के चेलों के लिए बकरियों को भेड़ों से अलग करने का रूपक कोई नई बात नहीं है। संसार के अधिकतर इलाकों में बकरियों से भेड़ों को अलग करने का दृश्य कभी देखा नहीं गया होगा, क्योंकि ऐसे झुण्ड इकट्ठे नहीं चलते और आपस में मिलते नहीं, परन्तु फलस्तीन के आस पास के इलाकों में आम तौर पर वे इकट्ठे भागते थे और भागते हैं। विलकिंस के अनुसार देशीय नसलें, रंग, रूप और आकार में एक जैसी लग सकती हैं।[31] स्पष्टतया शाम के समय झुण्डों को अलग किया जाता था, क्योंकि बकरियों को गर्माइश की आवश्यकता होती थी जबकि भेड़ों को खुली हवा में अच्छा लगता था।[32]

पूरे मत्ती रचित सुसमाचार में एक दोहरा विभाजन मिलता है। गेहूं और भूसी (3:12) साकेत ओर चौड़े मार्गों (7:13, 14), अच्छे और बुरे फल (7:15-20), और समझदार और मूर्ख बनाने वाले (7:24-27), गेहूं और जंगली बीज (13:24-30) अच्छी और बुरी मछलियां (13:47-50), दो पुत्रों (21:28-32), विवाह की तैयारी और बिना तैयारी किए अतिथि (22:1-14), समझदार और मूर्ख कुंवारियों (25:1-13), और भेड़ों और बकरियों (25:32, 33) में विभाजन दिखाई देता है।[33] इन अंतरों से संकेत मिलता है कि उद्धार पाए हुओं और खोए हुओं में स्पष्ट अन्तर है।

आयत 33. पशुओं को अलग करते हुए चरवाहा **भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ी करेगा**। भेड़ें अधिक मूल्य के पशु होते हैं और धर्मी लोगों को

दर्शाते हैं इस कारण उन्हें उसकी दाहिनी ओर सम्मान का समान दिया जाएगा (देखें 20:21; 22:44; 26:64; प्रेरितों 2:33, 34; 5:31; 7:55, 56)। बकरियां जो दुष्टों को दर्शाती हैं, बाईं ओर रखी गई हैं जो कम चाहने योग्य स्थिति है।

आयत 34. चरवाहा यहां राजा को कहा गया है जो महिमा के सिंहासन पर उसके बैठने के पिछले विवरण से मेल खाता है (25:31)। **अपनी दाहिनी ओर** धर्मियों (भेड़ों) को सम्बोधित करते हुए वह कहेगा, **''हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया हुआ है।''**

इस भौतिक संसार की नींव रखे जाने के समय, [34] परमेश्वर ने अपने अनन्त राज्य की भी नींव रखी थी। पृथ्वी पर राज्य (कलीसिया) की स्थापना के लिए आवश्यक था कि यीशु संसार के पापों के लिए मनुष्य बने और दुख उठाए। अपनी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के बाद यीशु ने ग्रेट कमीशन दिया। उसने यह कहते हुए इसका आरम्भ किया कि ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है'' (28:18)। पिता के पास ऊपर उठाए जाने पर उसने उस सिंहासन पर बैठकर परमेश्वर के राज्य पर राज करना आरम्भ कर दिया (प्रेरितों 2:32-36)। वह तब तक राज करेगा जब तक ''सारी प्रधानता और सारा अधिकार, और सामर्थ का अन्त,'' करके ''अपने बैरियों को अपने पांवों तले'' लाकर ''राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप'' नहीं देता (1 कुरिन्थियों 15:24, 25)। तब पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य स्वर्ग में परमेश्वर का ''अनन्त राज्य'' बन जाएगा (देखें 2 पतरस 1:11)। इस आयत में इसी स्वर्गीय मिरास को दिखाया गया है।

आयतें 35, 36. यीशु ने कुछ स्पष्ट कारण बताए कि कुछ लोगों को पिता की आशिषों में प्रवेश कराया जाएगा। उसने कहा कि जब वह **भूखा, प्यासा, नंगा** और बेघर था तो उन्होंने उसकी आवश्यकताओं को पूरा किया था। जब वह **बीमार** और **बंदीगृह** में था तो वह उससे मिलने गए थे।

इस दृष्टांत में न्याय का एकमात्र आधार नकारात्मक आज्ञाओं (''तू न करना'') के जुड़ने के बजाय सकारात्मक आज्ञाओं (''तू करना'') को मानना है। जोर इस बात पर है कि यीशु ने विश्वास की अवधारणा को जिसकी केवल ''विश्वास'' के रूप में गलत परिभाषा दी जाती है के विपरीत भले कार्य[35] दिए। प्रभु के भाई याकूब ने लिखा है:

> हे मेरे भाइयो, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है कि वह कर्म न करता हो, तो उससे क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है? यदि कोई भाई या बहिन नङ्गे उघाड़े हों, और उन्हें प्रतिदिन भोजन की घटी हो। और तुम में से कोई उन से कहे, कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो; पर जो वस्तुएं देह के लिए आवश्यक हैं वह उन्हें न दे, तो क्या लाभ? वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है (याकूब 2:14-17)।

इसके अलावा यूहन्ना ने पूछा, ''पर जिस किसी के पास संसार की संपत्ति हो और वह अपने भाई को कंगाल देखकर उस पर तरस खाना न चाहे, तो उसमें परमेश्वर का प्रेम क्योंकर बना रह सकता है?'' (1 यूहन्ना 3:17)।

शुभ कर्मों पर जोर देने का अर्थ यह नहीं माना जाना चाहिए कि व्यक्ति अपना उद्धार स्वयं

कमा सकता है। धर्मी भेड़ों में गिने जाने के लिए ''मसीह में'' होना अर्थात ''क्रूस पर प्रायश्चित की उसकी मृत्यु के लाभ लेना आवश्यक है'' (रोमियों 6:3, 4; 8:1)।[36] यह वचन राज्य के सुसमाचार से मेल नहीं खाता जो उद्धार को ईश्वरीय दान के रूप में दिखाता है। पौलुस जिसने बार-बार अनुग्रह की बात की, ने भी शुभ कर्मों के महत्व पर ज़ोर दिया (2 कुरिन्थियों 5:10; गलातियों 6:7-10)। शुभ कर्मों के रूप में धार्मिकता का महत्व बताते हुए यीशु इसे एक बड़े संदर्भ के रूप में बताता है जिनमें परमेश्वर अपने लोगों के लिए उद्धार देते हुए उनके प्रति अनुग्रह से काम करता है।[37]

परमेश्वर के अनुग्रह का विषय मत्ती रचित सुसमाचार की पूरी पुस्तक में मिलता है। जन्म के बाद मसीहा का नाम ''यीशु'' रखा जाना था क्योंकि ''[उसने] अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार'' करना था (1:21)। अपनी सेवकाई के दौरान यीशु ने अपने सुनने वालों को उसमें असली आराम पाने के लिए आमन्त्रित किया (11:28-30)। अपने मिशन का उद्देश्य बताते हुए यीशु ने कहा कि वह ''इसलिए आया कि बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे'' (20:28)। इसके अलावा प्रभु भोज की स्थापना करते हुए यीशु ने स्पष्ट कर दिया कि उसका लहू ''बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया'' जाना था (26:28)।

आयतें 37-39. धर्मी लोग जिन्हें अपने शुभ कर्मों के लिए सराहा गया था, पूछने लगे, ''**हे प्रभु, हमने कब** [तेरे लिए यह सब किया] **?**'' यह प्रश्न उन विश्वासियों के लिए विशेषकर उपयुक्त होना था, जिन्होंने प्रभु को देह में कभी नहीं देखा।

भूख मिटाने, **भूखे** को खिलाना, **प्यासे** को पिलाना और **नंगे** को कपड़ा पहनना मानवीय दयालुता के बुनियादी काम हैं (अय्यूब 22:6, 7; नीतिवचन 25:21; यशायाह 58:7; यहेजकेल 18:7, 16; मत्ती 10:42; मरकुस 9:41; रोमियों 12:20; याकूब 2:15, 16)। ''नंगा'' के लिए यूनानी शब्द (*gumnos*) ''जिम्नेज़ियम'' शब्द से सम्बन्धित है, क्योंकि यूनानी लोग पारम्परिक रूप में नंगे व्यायाम करते थे। नये नियम में *gumnos* का अर्थ ''बिना ओढ़ने के, नंगा'' (मरकुस 14:52) व अपर्याप्त कपड़े पहनने, नंगा उघाड़ा (याकूब 2:15) या ''कम कपड़े पहने, बाहरी वस्त्र के बिना'' (यूहन्ना 21:7) हो सकता है।[38] इस संदर्भ में इस शब्द का संकेत सम्भवतया बिना पर्याप्त कपड़े पहनने के लिए है; किसी ऐसे व्यक्ति को मिलना बहुत ही कम होगा जिसके पास कोई कपड़ा हो ही न।

प्राचीन काल में **परदेशी** का आतिथ्य एक सामान्य शिष्टाचार था (उत्पत्ति 18:1-8; न्यायियों 19:16-21; अय्यूब 31:32; प्रेरितों 10:23; 1 तीमुथियुस 5:10; इब्रानियों 13:2; 3 यूहन्ना 5)। यूनानी-रोमी संस्कृति के बाहर घूमने पर ज़ोर देने के प्रभाव से फलस्तीन में बहुत सी सराय बन गई थीं। परन्तु यह अपने बुरे नाम के लिए प्रसिद्ध थी,[39] और यहूदियों और मसीही लोगों द्वारा समान रूप से विशेषकर इससे दूर रहा जाता था।[40] यीशु ने लिमिटेड कमीशन पर जब भी अपने प्रेरितों को भेजा, उसने उन्हें सरायों में रहने को नहीं कहा। इसके बजाय उसने उन्हें जिस नगर या गांवों में वे जाते थे वहां किसी योग्य व्यक्ति को ढूंढ़कर उसके घर रहने की आज्ञा दी (10:11)।

बीमारों के साथ-साथ विधवाओं और अनाथों की सुधि लेना (याकूब 1:27) दयालुता का एक और काम था। याकूब ने एक ऐसी स्थिति दिखाई जिसमें एक बीमार मसीही कलीसिया के ऐल्डरों को बुलाता है। वे उस पर प्रार्थना करें और तेल से उसे अभिषेक करे, जो उसकी चंगाई

का संकेत (और शायद इसमें सहायक) था (याकूब 5:14)।

बंदीगृह में वे विश्वासी थे जिन्हें अन्यायपूर्ण ढंग से दोषी बना दिया गया था (इब्रानियों 13:3)। इन कैदियों के प्रति सहानुभूति दिखाना किसी के नाम और स्वतन्त्रा के लिए खतरा हो सकता था। बेड़ियों में बंधे कैदियों को सामान्य अपराधी माना जाता था और उनके विश्वासयोग्य मित्रों को भी अपमान की दृष्टि से देखा जाता था। जैसे वे उनके साथ ही दोषी हों।[41] जेल में और नज़रबंद रहते समय पौलुस को उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसका ध्यान रखने वालों से मिलने की अनुमति होती थी (प्रेरितों 24:23; 28:30, 31)।[42]

आयत 40. राजा ने अपने प्रश्न पूछने वालों को यह कहते हुए उत्तर दिया, ''**तब राजा उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया।**'' यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया था, ''जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजने वाले को ग्रहण करता है'' (10:40)।

''मेरे इन भाइयों'' वाक्यांश को मसीही लोगों के हवाले से समझा जाना चाहिए। यीशु ने ज़ोर दिया कि जो लोग उसके आज्ञाकार हैं वे उसका आत्मिक परिवार हैं (12:49, 50; लूका 8:21)। मसीही लोग एक-दूसरे के लिए जो कुछ भी कर रहे होते हैं वे मसीह के लिए करते हैं। मसीह की देह अर्थात कलीसिया की आवश्यकताओं की पूर्ति करके मसीह का सच्चा सेवक बनना साबित किया जाता है (इफिसियों 1:22, 23)। यीशु यहां केवल दान की बात नहीं कर रहा था। वास्तव में वह अपने चेलों की सहायता के लिए आवश्यकता की बात कर रहा था। जब हम यीशु की बातों को समझ जाते हैं, तो हम देखेंगे, जैसा कि जेम्स बर्टन काफमैन ने देखा कि ''लोग जो कुछ उसकी कलीसिया के लिए करते हैं, वह वे उसके लिए करते हैं।''[43]

''इन छोटे से छोटे'' स्पष्ट करते हुए यीशु ने अपनी बात पक्की की। आम तौर पर यीशु के अधिक प्रसिद्ध चेलों पर ध्यान दिया जाता है, जबकि कम प्रभावी चेलों को नज़रअन्दाज़ कर दिया जाता है। ''छोटे'' मत्ती में पहले बताए ''इन छोटों'' जैसे हो सकते हैं (10:42; 18:6, 10, 14)। यीशु के चेलों को निर्बल और नि:सहाय लोगों के प्रति उसकी करुणा का अनुकरण करना आवश्यक है (देखें 11:5; लूका 4:18)।

आयत 41. यहां पर राजा ने अपना ध्यान **अपनी बाईं ओर** दुष्टों (बकरियों) की ओर किया। उसने **श्रापित लोगों से कहा, ''मेरे सामने से चले जाओ''** दण्ड दिया जाना ''प्रभु के सामने से दूर'' किया जाना (2 थिस्सलुनीकियों 1:9; NIV), अर्थात उसकी संगति से दूर होना है।

दुष्टों को **अनन्त आग में** अर्थात नरक में फेंक दिया जाएगा। ''अनन्त'' (*aiōnios*) का अर्थ है ''बिना अन्त के, कभी खत्म न होना, सदा तक रहना।''[44] परमेश्वर (रोमियों 16:26) और पवित्र आत्मा (इब्रानियों 9:14) के अनादि होने को बताने के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। यीशु की बात हमें नरक के समय को सीमित करके यह कहने की अनुमति नहीं देगी कि खोए हुए भस्म हो जाएंगे। *Aiōnios* का इस्तेमाल स्वर्ग और नरक दोनों के समय के वर्णन के लिया किया जाता है (25:46)। यदि कोई नरक के समय को सीमित करता है, तो उसे स्वर्ग के समय को भी सीमित करना होगा। अधर्मी लोग नरक में तब तक रहेंगे, जब तक धर्मी

लोग स्वर्ग में रहेंगे। यीशु ने कहा कि आग अनन्त है। पहले उसने नरक को "कभी न बुझने वाली आग, ..." जहां उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं उठती का स्थान बताया था (मरकुस 9:43, 48)। (नरक पर और जानकारी के लिए और टिप्पणियां देखें 5:22; 13:40-42.)

तैयार की गई (*hetoimazō*) क्रिया शब्द आयत 34 से दोहराया गया है, जो कहता है कि राज्य धर्मियों के लिए "तैयार किया गया" है। यहां पर पीड़ा का स्थान **शैतान और उसके दूतों के लिए** "तैयार किया गया" है। अपने बड़े प्रेम के कारण परमेश्वर ने मनुष्य जाति के पीड़ा के उस भयानक स्थान में जाने से रोकने के लिए हर आवश्यक काम किया है (यूहन्ना 3:16, 17, 36)।

आयतें 42, 43. दुष्टों को "शुद्ध और निर्मल" मसीहियत के व्यवहार को नज़रअन्दाज़ करने के कारण दण्ड दिया गया (देखें याकूब 1:27)। उन्होंने उनकी सेवा नहीं की जिनकी धर्मियों ने की थी, अर्थात जो **भूखे, प्यासे, परदेशी, नंगे, बीमार** और **बंदीगृह** में थे (25:35, 36)। ये व्यभिचार, फोर्निकेशन, मतवालेपन, झूठ बोलने और चोरी करने जैसे *चूक* के बजाय *भूल* के पाप थे (1 कुरिन्थियों 6:9, 10) ।[45] याकूब ने लिखा है, "इसलिए जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता, उसके लिए यह पाप है" (याकूब 4:17)।

आयत 44. दण्ड पाने वालों ने जब राजा के शब्द सुने तो वे पूछने लगे, **"हे प्रभु, हम ने तुझे कब** [इन वस्तुओं की आवश्यकता में] **देखा, और** [तेरी सेवा न कर पाए] ?" चाहे संक्षेप में ही था पर उनका प्रश्न धर्मियों द्वारा पूछे गए प्रश्न का ही प्रतिबिम्ब था (25:37-39)।

आयत 45. अपने पिछले उत्तर के साथ मेल खाते हुए (25:40) राजा ने उत्तर दिया, **"मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने जो इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया।"** प्रभु की देह को उचित आवश्यकताओं को पूरा न कर पाने का अर्थ उसकी सेवा न कर पाना है।

इस दृष्टांत में उनको दिए गए दण्ड के कारण वे हमारा प्रभु बिल्कुल स्पष्ट है। हमारा उद्धार हमारे शुभ कर्मों के द्वारा नहीं हुआ है, परन्तु हमारा उद्धार उनके बिना नहीं हो सकता है। वे इस बात का प्रमाण हैं कि हमारा विश्वास सच्चा है (याकूब 2:14-26)।

आयत 46. राजा ने बात खत्म की, **"यह अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।"** नये नियम में यहां "अनन्त दण्ड" शब्द का केवल एक बार इस्तेमाल है। ए. टी. रॉबर्टसन ने दो शब्दों के इस अनुवाद के बारे में लिखा है:

> *अनन्त दण्ड* (*kolasin aiōnion*) *kolasin* शब्द *kalazō* से निकला है, छांटना या काटना। इस कारण बड़ी आशा से जुड़े रहने वाले लोग इस वाक्यांश का इस्तेमाल पुरानी कांट-छांट के अर्थ में करते हैं जो अन्तत: बकरियों के उद्धार का कारण बनती हैं, दण्ड के बजाय अनुशासनात्मक के रूप में। जैसा कि अरस्तु ने ध्यान दिलाया, *mōria* (बदला लेना) और *kolasis* के बीच अन्तर का ध्यान दिलाया। परन्तु उसी विशेषण शब्द *aiōnios* [अनन्त] का इस्तेमाल *kolasin* (दण्ड) *zōēn* [जीवन] के साथ किया जाता है। शब्द की व्युत्पत्ति से यदि हम *कोलासिन* के दायरे को सीमित करें तो हमारे पास भी केवल वह पुराना *कोएम* शब्द ही हो सकता है। यीशु के शब्दों में यहां थोड़ा सा भी

संकेत नहीं है कि यह दण्ड जीवन के साथ समकालीन नहीं है।[46]

दण्ड पाने वालों के विपरीत धर्मियों को ''अनन्त जीवन'' में प्रवेश करवाया जाएगा। ''अनन्त दण्ड'' के विपरीत नये नियम में यह शब्द बार-बार मिलता है, विशेषकर यूहन्ना के लेखों में।[47]

✧✧✧✧✧ **सबक** ✧✧✧✧✧

न्याय पर तीन दृष्टांत (अध्याय 25)

निम्न तीन बिन्दुओं के साथ इस अध्याय को संक्षिप्त करते हुए एक पाठ बनाया जा सकता है: (1) समझदार होना (25:1-13); (2) वफ़ादर होना (25:14-30); और (3) तैयार रहो (25:31-46)।

डेविड स्टिवर्ट

दस कुंवारियों का दृष्टांत (25:1-13)

यीशु सर्वश्रेष्ठ गुरु था। समझदार और मूर्ख कुंवारियों की कहानी में, यीशु के सब दृष्टांतों की तरह एक संदेश था, जो जीवन में लागू होता था और इसका सार्थक उद्देश्य था।

पहले, दृष्टांत हमें समझाता है कि हमें तैयार रहना चाहिए (25:8)। वचन पाठ में मुख्य विचार ''चौकस रहो'' या ''सावधान रहो'' है (KJV)। इसमें भविष्य के लिए पहले से विचार करना शामिल है।

दृष्टांत में एक और विचार है कि जीवन में कुछ चीजें उधार नहीं दी जा सकती (25:9)। परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध को विरासत में या उधार नहीं लिया जा सकता; हमें अपने आप ही उस सम्बन्ध को बढ़ाना आवश्यक है। समझदार कुंवारियों पर मूर्खों के साथ अपना तेल साझा करने से इनकार करने के लिए दोष नहीं लगाया जाना चाहिए। इस मामले में उनका तर्क बिल्कुल सही था।

इस वचन में एक अन्तिम विचार मिलता है कि खो जाने पर कुछ चीजें दोबारा नहीं मिल सकतीं (25:10-13)। अवसर एक से अधिक बार दस्तक दे सकते हैं पर किसी समय यह केवल अन्तिम बार दस्तक देता है। हमें अवसर गंवाने नहीं चाहिए।

मसीही का कमीशन (25:1-13)

एक अवसर पर यीशु ने अपने आपको एक दूल्हे के साथ मिलाया (9:15; 25:1; यूहन्ना 3:29)। यदि हम अपने आपको उसके बारातियों के रूप में देखते हैं तो हमें उसके आने की राह देखते हुए क्या काम करने को दिया गया है? अपने काम को समझें और इसे प्रेम, आज्ञापालन और वफ़ादारी से पूरा करें।

मसीही लोगों को दिया गया यीशु का कमीशन प्राथमिकता देने वाला है। किसी भी काम को इसके बराबर या इससे नहीं मिलाया जा सकता। सुसमाचार के सृजन में अपना प्राण और लहू डालते हुए हमें इसे फैलाने के लिए अपने आपको देना आवश्यक है। यीशु परोपकार के काम

करता था, पर उसके मिशन का मुख्य उद्देश्य यह नहीं था। वह ''खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया था'' (लूका 19:10)।

मसीही लोगों को यीशु का कमीशन व्यावहारिक बनने का है। उसका वचन मोटे तौर पर बता देता है कि वह हम से ग्रेट कमीशन को कैसे पूरा करवाना चाहता है। हमें (1) ''सब जातियों में'' सुसमाचार बताना (28:19), (2) नये मसीही लोगों को ''सब बातें [जिनकी यीशु ने] आज्ञा दी है, मानना'' सिखाना है (28:20), और (3) प्रभु के लोगों की हर मण्डली के लिए अगुवे तैयार करना है। प्रेरितों के काम में चर्च बिल्डिंगों अर्थात गिरिजा घरों या वेतनभोगी स्थानीय प्रचारकों के बारे में कुछ नहीं कहा गया, पर यह हर कलीसिया में ऐल्डरों की नियुक्ति करने (प्रेरितों 14:23), ''तीमुथियुस जैसे'' लोग पैदा करने (देखें प्रेरितों 16:1-3) और प्रचारकों को भेजने (प्रेरितों 13:1-3) की बात अवश्य कहता है।

मसीही लोगों को यीशु का कमीशन सिद्ध बनने का है। इसमें सुधार की गुंजाइश नहीं हो सकती। अपनी कलीसिया के लिए दिए जाने के समय यीशु की यह योजना सम्पूर्ण थी, और पूरे मसीही युग के दौरान उसके चेलों के लिए यह सम्पूर्ण रहेगी। यीशु के ग्रेट कमीशन में किसी भी मिशनरी या प्रचारक के लिए आवश्यक हर बात है, कम से कम इसके बीज के रूप में तो है। हम उस मिशन को जिसे यीशु ने आरम्भ किया था लें जिसे उसने हमें दिया है। यदि हम उसकी योजना को लागू करते हैं तो वह हमारी बातों और हमारे कामों को बढ़ावा देगा।

मसीही लोगों के लिए यीशु का कमीशन आगे बढ़ाते रहना है। उसकी योजना पृथ्वी पर के शेष समय के लिए है। यीशु ने कहा, ''मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूं'' (28:20)। उसके वापस आने तक हम सुसमाचार के उसके काम को बढ़ाने, नये मसीहियों को वचन सुनाने और विश्वासयोग्य चेलों को संसार के सबसे बड़े काम में लगने के लिए तैयार करने के उसके काम को करते रहें।

डेविड स्टिवर्ट

''जागते रहो'' (25:13)

यदि यीशु हमें बता देता कि वह ठीक किस समय पर आने वाला है, तो कौन तैयार न होता? कितने लोग उसके आने से थोड़ा पहले पापपूर्ण जीवन बिताने की कोशिश कर रहे होते हैं और फिर उसके लौटने से थोड़ा पहले अपनी जीवन शैलियों को बदल देते हैं? क्योंकि हम नहीं जानते कि यीशु कब आ रहा है इसलिए हमें हमेशा तैयार रहना आवश्यक है। यीशु के शब्दों में, हमें ''प्रार्थना करते'' रहना आवश्यक है कि हम ''परीक्षा में न'' पड़ें (26:41)। क्या इसका अर्थ यह है कि हम प्रभु की वापसी के लिए आराम से बैठकर, स्वर्ग की राह देखते रहें और चौकस रहें? यीशु को मालूम था कि कुछ लोग ऐसा कर सकते हैं। ऐसा होने से बचाने के लिए उसने तोड़ों का दृष्टांत दिया।

तोड़ों का दृष्टांत (25:14-30)

तोड़ों का दृष्टांत प्रभु की वापसी के सम्बन्ध में गलत अवधारणा को स्पष्ट करता है। स्पष्टतया

कुछ आरम्भिक चेलों का मानना था कि मसीह स्वर्ग में अपने उठाए जाने के लिए थोड़ी देर बाद वापस लौट आएगा। उन्होंने निरन्तर प्रार्थना, अध्ययन और मनन में समय बिताने के लिए अपना काम काज और इस जीवन के झमेलों को छोड़ दिया। तोड़ों का दृष्टांत इस व्यवहार के सही न होने को दिखाता है।

''तोड़ा'' आज के समय में (25:14-30)

''तोड़ा'' के लिए अंग्रेजी शब्द ''टेलेंट'' का अर्थ ''योग्यता, कौशल, या दान यानी गिफ़्ट'' हो चला है। व्यक्ति की ''योग्यता'' उसकी स्वाभाविक योग्यता और व्यक्ति से सम्बन्धित है। हम में संगीत की योग्यता, मेकेनिकल योग्यता या गणित का कौशल हो सकता है। परमेश्वर जानता है कि हम सब में एक जैसी क्षमता नहीं होती, क्योंकि उसने हम सब को अलग-अलग बनाया है (देखें 1 कुरिन्थियों 12:12-31)। प्रत्येक दास को दूसरे से कुछ अलग मिला था, पर किसी को भी छोड़ा नहीं गया था। परमेश्वर के राज्य में बिना तोड़े वाला कोई व्यक्ति नहीं है। हम में से हर किसी को अपने तोड़े को पहचानकर इसका इस्तेमाल करना है, नहीं तो हम इसे खो सकते हैं।

दृष्टांत में धन का दिया जाना किसी भी प्रकार से इन सेवकों के स्वामी के आदर, भरोसे या प्रेम के स्तर से सम्बन्धित नहीं था। इसका सम्बन्ध केवल उनकी व्यक्तिगत योग्यताओं से था। क्या उसे तीसरे दास से बढ़कर पहले दो दासों में अधिक भरोसा था? नहीं, उसे उनकी योग्यताओं पर पूरा भरोसा था और उसने हर किसी को उसकी योग्यता के अनुसार दिया। परमेश्वर हम से समान रूप में सफल होने की मांग नहीं करता, पर वह हम सब से वफ़ादार होने की उम्मीद करता है।

न्याय का दृश्य (25:31-46)

न्याय के दिन के दृश्य पर विचार करें: (1) सबसे बड़ा जज प्रधानगी के लिए वहां होगा (25:31); (2) सबसे बड़ी भीड़ वहां होगी (25:32); (3) सबसे बड़ी पुस्तक खोली जाएगी (प्रकाशितवाक्य 20:12); (4) सबसे बड़ी जुदाई होगी (25:32, 33); और (5) सबसे बड़ा फैसला सुनाया जाएगा (25:34, 41, 46)।[48]

सबसे बड़ी धार्मिक सभा, जिससे कोई भी अनुपस्थित नहीं होगा (25:31-46)

लोग आराधना सभाओं में भाग न लेने के कई बहाने ढूंढ़ लेते हैं। मत्ती 25:31-46 में दिखाई गई बड़ी धार्मिक सभा में न जा पाने का कोई बहाना स्वीकार नहीं किया जाएगा (देखें यूहन्ना 12:48; रोमियों 14:12; 2 कुरिन्थियों 5:10)। पृथ्वी पर रहा हर व्यक्ति वहां होगा।

यीशु स्वर्गदूतों से घिरा अपने महिमामय सिंहासन पर बैठा होगा (25:31)। सब जातियों को वहां इकट्ठा किया जाएगा (25:32)। जज के रूप में काम करते हुए राजा भेड़ों को बकरियों से अलग करेगा (25:31-33)।

अनन्त जीवन या अनन्त दण्ड (25:34, 41, 46)

भेड़ों और बकरियों वाले दृष्टांत में मिलने वाले न्याय के दृश्य के केवल दो ही सम्भावित प्रमाण होंगे: अनन्त जीवन या अनन्त दण्ड। इसके बीच की या तीसरे विकल्प (जैसे प्रगर्टरी) जैसी कोई बात नहीं होगी। अनन्त जीवन को (धर्मियों) भेड़ों के लिए जो जिन्होंने वफ़ादारी से राजा की सेवा की, प्रतिफल के रूप में दिखाया गया है। उन्हें सचमुच में पिता द्वारा ''धन्य'' ठहराया गया है। वारिसों के रूप में वे स्वर्गीय राज्य के ''वारिस'' हैं जिसे समय के आरम्भ से ही उनके लिए तैयार किया गया है। मसीह और परमेश्वर के साथ उनकी पक्की सहभागिता है।

अनन्त दण्ड दुष्टों (बकरियों) का अन्त है जिन्होंने राजा की आज्ञा नहीं मानी। ''धन्य'' होने के बजाय वे ''श्रापित'' हैं। मसीह के साथ संगति का आनन्द लेने के बजाय उन्हें उसके सामने से निकाल दिया जाता है। उन्हें परमेश्वर के सामने से और हर अच्छी बात से दूर कर दिया जाता है। उनका भाग अनन्त आग है जो कभी न खत्म होने वाली बड़ी दुख और पीड़ा को दिखाता है। उनकी संगति शैतान, उसके दूतों और हर बुरी चीज़ से है।

डेविड स्टिवर्ट

दूसरों की सहायता करना (25:40)

भेड़ों और बकरियों के दृष्टांत में यीशु ने मसीह की देह के भीतर (''मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों'') दूसरों की सहायता करने पर ज़ोर दिया। यरूशलेम में आरम्भिक मसीही लोगों में ऐसा परोपकार आम था। उनकी अत्यधिक उदारता के कारण, ''उनमें कोई भी दरिद्र न था'' (प्रेरितों 4:34)।

प्राथमिकता चाहे साथी मसीही लोगों को दी जानी चाहिए पर इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीह के बाहर जो लोग हैं उनकी सहायता करने की हमारी जिम्मेदारी खत्म हो जाती है। पौलुस ने लिखा है, ''इसलिए जहां तक अवसर मिले हम *सब के साथ* भलाई करें; विशेष करके विश्वासी भाइयों के साथ'' (गलातियों 6:10)। गैर मसीही लोगों की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने से हो सकता है कि आत्मिकता में उनकी सहायता के लिए दरवाजे खुल जाएं।

डेविड स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1992), 620. [2]कुछ प्राचीन हस्तलेखों में ''और दूल्हन'' जोड़ा गया है, परन्तु यह बात रूपक को अधिक जटिल बना देती है। ब्रूस एम. मैत्ज़गर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. (स्टुगर्ट: जर्मन बाइबल सोसायटी, 1994), 52-53. [3]जे. डब्ल्यू. मैक्गार्वे, *द न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू एंड मार्क* (पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 215. [4]देखें रॉबर्ट एच. गुंड्री, *मैथ्यू: ए कमैंट्री ऑन हिज़ लिटरेरी एंड थियोलॉजिकल आर्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 498; रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 233. [5]जॉन लाइटफुट, *ए कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट फ्रॉम द टालमुड एंड हेब्रेका: मैथ्यू-1 कुरिन्थियंस,* अंक 2, *मैथ्यू-मार्क* (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1859; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर, 1979), 322. [6]जैक पी. लुईस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पार्ट 2, द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन,

टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1976), 133. [7]गुंड्री, 499. [8]माउंस, 233. [9]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 14–28*, वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33बी (डलास: वर्ड बुक्स, 1995), 729. [10]डब्ल्यू. एफ. अलब्राइट एंड सी. एस. मन्न, *मैथ्यू*, द एंकर बाइबल (गार्डन सिटी, न्यू यार्क: डबलडे एंड कं., 1971), 302.

[11]*जौंडरवन इलस्ट्रेटेड बाइबल बैकग्राउंड्स कमैंट्री*, अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक*, संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन, 2002), 155 में माइकल जे. विलकिंस, ''मैथ्यू।'' [12]मैकार्वे, 217. [13]इसके विपरीत ''मीना'' एक सौ दीनार के बराबर था। एक मीना की कीमत तोड़े का 1/60 था। (देखें लुईस, 135.) [14]डग्लस आर. ए. हेयर, *मैथ्यू*, इंटरप्रिटेशन (लुइसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1993), 286. [15]KJV and NKJV में सफल के जाने के साथ ''तुरन्त'' या (''सीधा'') जोड़ा गया है परन्तु आधुनिक अनुवादों में आम तौर पर इसे पहले दास की निवेश की गतिविधियों के साथ बताया गया है। [16]टालमुड *बाबा मेजिया* 42ए. [17]देखें मिशनाह *बाबा कामा* 9.2; 10.5; *बाबा मेटजिया* 6.3. [18]गुंड्री, 508. [19]*द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया*, संशो. संस्क., संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1979), 1:409 में मेरलिन डब्ल्यू. काल, ''बैंक; बैंकिंग।'' [20]लुईस, 136.

[21]हैग्नर, 736. [22]डेविड हिल, *द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू*, द न्यू सेंचुरी बाइबल कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1972), 329. [23]मौरिस, 632. [24]इन दृष्टांतों में उन दो पुत्रों की बात है जिनसे उनके पिता ने दाख की बारी में काम करने को कहा (21:28–32), और भूस्वामी और दाख की बारी (21:33–41), राजा के पुत्र का विवाह (22:1–14), दस कुंवारियां (25:1–13), तोड़े (25:14–30) और भेड़ों और बकरियों को अलग करने वाला चरवाहा (25:31–46)। [25]न्याय के एक समानांतर दृश्य के लिए, देखें प्रकाशितवाक्य 20:11–15. [26]देखें *1 एनोक* 62.1–16; 69.27–29. [27]युगों के हज़ार वर्ष की शिक्षा गलत ढंग सिखाती है कि रैपचर और द्वितीय आगमन दो अलग-अलग घटनाएं हैं। [28]देखें वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *बी लॉयल* (व्हीटन, इलिनोय: विक्टर बुक्स, एसपी पब्लिकेशंस, 1980), 184–85. [29]''जातियां'' में ग्रेट कमीशन वाले सभी लोग भी आते हैं (28:19; देखें मरकुस 16:15)। [30]विलियम हैंड्रिक्सन, *न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री: एक्सपोज़िशन ऑफ़ द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 886.

[31]विलकिंस, 157. [32]हिल, 331; माउंस, 235. [33]लुईस, 140. [34]''जगत के आदि'' वाक्यांश सृष्टि के सम्बन्ध में नये नियम में कई बार आता है (13:35; लूका 11:50; यूहन्ना 17:24; इफिसियों 1:4; इब्रानियों 4:3; 9:26; 1 पतरस 1:20; प्रकाशितवाक्य 13:8; 17:8)। अन्य हवालों में से कुछ में यीशु मसीह के बलिदान के द्वारा मनुष्य के उद्धार की परमेश्वर की अनन्त योजना भी शामिल है। [35]यीशु ने आज्ञापालन और सकारात्मक प्रतिफल के बीच सम्बन्ध पर बार-बार ज़ोर दिया (7:21–27; 12:36, 37; यूहन्ना 12:47, 48)। [36]यदि मसीह के लहू से किसी के पाप ढांपे गए तो उसमें कोई पाप ही नहीं होता जिसका न्याय किया जाता है। [37]हैग्नर, 746–47. [38]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंगलिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर*, 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 208. [39]देखें मिशनाह *अबोदाह जरह* 2.1. [40]*द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया*, संशो. व संपा., संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 2:826 में राल्फ अरल, ''इन्न; लॉज; लॉजिंग प्लेस।''

[41]डेविट स्टिवर्ट, *ए कमैंट्री ऑन फिलिपियंस* (सरसी, आरकैंसा: स्टिवर्ट पब्लिकेशंस, 2006), 81. [42]अधिक जानकारी लिए देखें स्टिवर्ट, 80–82. [43]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन द गॉस्पल ऑफ़ मैथ्यू* (आस्टिन, टैक्सस: फ्रर्म फ्राउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1968), 410. देखें प्रेरितों 9:4, 5; 1 कुरिन्थियों 8:12. [44]सी. जी. विल्के एंड विलिबल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक-इंगलिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट*, अनु. एवं संशो. जोसेफ़ एच. थेयर (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 20. [45]हेयर, 288. [46]ए. टी. रॉबर्टसन, *वर्ड पिक्चर्स इन द न्यू टैस्टामैंट*, अंक 1, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू–द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मार्क* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1930), 201–2. [47]देखें मत्ती 19:16, 29; मरकुस 10:17, 30; लूका 10:25; 18:18, 30; यूहन्ना 3:15, 16, 36; 4:14, 36; 5:24, 39; 6:27, 40, 54, 68; 10:28; 12:25, 50; 17:2, 3; प्रेरितों 13:46, 48; रोमियों 2:7; 5:21; 6:22, 23; गलातियों 6:8; 1 तीमुथियुस 1:16; 6:12; तीतुस 1:2; 3:7; 1 यूहन्ना 1:2; 2:25; 3:15; 5:11, 13, 20; यहूदा 21. [48]डब्ल्यू. ए. ब्रैडफील्ड, के सरमन से लिया गया जिन्होंने फ्रीड हार्डमैन यूनिवर्सिटी, हैंडरसन, टैनीसी में पढ़ाया और कई साल तक एक इवैंजलिस्ट के रूप में प्रचार किया।